



हर परिस्थिति में खुद को रखें कॉन्फिडेंट स

दाशिव पढ़ाई में अच्छे हैं। दिखने में समझदार। नौकरी जल्द शुरू कर दी थी। कुछ ही साल में अपनी पहचान भी बना ली और एक वरिष्ठ अधिकारी के लिए अलग से काम करके उनका विश्वास भी बासिल कर लिया। इसका उन्हें फायदा भी मिलता रहा। पद और प्रतिशा तो मिली ही, कई बार विदेश जाने के अवसर भी मिला। मगर कई साल ऐसे ही बीने के कारण सदाशिव आत्ममुग्धता के शिकार होते चले गए। प्रभावशाली अधिकारी का संरक्षण मिला होने के कारण वे खुद को बेहद सुरक्षित महसूस करने लगे। इस बीच उन्हें कई प्रोजेक्ट मिले, पर भरपूर समय मिलने के बावजूद किसी भी खास प्रभाव छोड़ न पाने के कारण अतिरिक्त वे अपने मूल विभाग में ही बने रहे। यही उनसे बुक्ह होती चली गई। अपने मूल विभाग के बैंस से उनकी टट्ट्युनिंग बनने और प्रगाढ़ होने के बजाय बिंदूती चली गई लेकिन आत्ममुग्धता और उच्चाधिकारी की शक्ति के कारण उन्होंने इसका धारा परवाह नहीं की। विभागीय बैंस के उपेक्षापूर्ण नजरिये से देस लाने के बावजूद उनका स्वाभिमान नहीं जागा और वे निश्चिन्तता के साथ टाइम पास करते रहे। इन्हाँनी ही, सोशल साइट्स पर भी वे खबर दिखते और अपनी बैंकों टिप्पणियों पर खुद ही खुश हो लेती। कुछ समय बाद स्थितिया करवट लेने लगी। प्रभावशाली अधिकारी का प्रभाव जाता रहा। और एक समय ऐसा भी आया, जब उनकी जगह कंपनी में कोई और आ गया। अब सदाशिव को भी सर्वत हो जाना चाहिए था, पर ऐसा हुआ नहीं। उनका रवैया जस का तस बना रहा। वे चाहते, तो अपने विश्वासी अधिकारी के रहते किंतु और विभाग या केंद्र या प्रोजेक्ट में अच्छे पद पर शिष्ट हो सकते थे लेकिन सुविधाजीवी और एकरस जीवन के आदी ही चुके सदाशिव ने ऐसी काइफ हल नहीं की। एक दिन जब उन्हें कुछ गलतिया बताते हुए संस्थान से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया, तब उन्हें एहसास हुआ लेकिन तब उनके पास संभलने और सुधरने का मोका नहीं था।

भंवर है कंफर्ट जोन

सदाशिव की सच्ची कहानी महज एक उदाहरण है। आपको अपने संस्थान या दूसरी संस्थाओं, विभागों में ऐसे कई लोग मिल जाएंगे, जो कंफर्ट जोन में समय बिताते हुए खुश दिखेंगे। कई लोग यह भी कहते मिल जाएंगे कि अरे भाई, नौकरी तो सुरक्षित ही है, फिर काम की टेंशन में क्यों

परेशान रहें। दरअसल, ऐसे लोग यह नहीं सोचते कि इस प्रकार का रवैया खक्कर वे खुद के नुकसान की ही नीव रख रहे हैं। स्थितिया हमेशा एक-सी नहीं रहती। जो लोग काम से जी बुराते हैं, नया सीखने-जानने में विलचस्पी नहीं रखते, कभी पहल करके कोई काम नहीं करते, कोई काम कहने पर समाधान के बजाय तमाम तरह

नौकरी के दौरान अवैध अपने काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। नौकरी के दौरान अक्सर एक जैसा काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। लगातार सुविधापूर्ण स्थिति में आ जाते हैं, जो काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं। अगर आप नीचे कंफर्ट जोन में रहते हैं, तो वक्त रहते समझ जाएं और ऐसा करके ही आप खुद को हर परिस्थिति में कॉन्फिडेंट रख सकेंगे।



उपयोगिता करें साहित

आप निजी कंपनी में काम कर रहे हों या फिर सरकारी सेवा में हों, छोटे पद पर हों या बड़े पद पर, अगर आप अपने पद की जरूरतों के अनुसार खुद की उपयोगिता साहित करने का प्रयास नहीं करते, तो एक-न-एक दिन आपको जरूर नुकसान हो सकता है। अगर आप समय रखते नहीं चोरते, तो फिर आप किसी को दोष भी नहीं दे सकते। आपको कोई भी जिम्मेदारी दी जाती है, उसे उत्साह के साथ पूरा करने का प्रयास करें। अगर आपको नामांकन की उठाने के लिए उसमें बैंस से और समझने की या किसी सहयोगी की मदद लेने की जरूरत है, तो वे उसमें इतना बिलबाल कर देते हैं या फिर उन्होंने इतना उलझा देते हैं कि बैंस को आगे उठाने काम न देने के बारे में सोचना पड़ जाता है। ऐसे लोग अपनी इस कथित रणनीति पर भले ही खुश होते हीं पर जरा सोचें, क्या वह बैंस की उनकी प्रशंसा-अनुशंसा करेगा और जब कभी डिमोशन न कर पाया या इकरानी की स्थिति में उनका नाम ही आगे बढ़ा दिया गया, तो फिर क्या उन्हें संस्थान और बैंस की आलोचना का अधिकार होना चाहिए।

हर दिन हो नया

अगर आप एकरस जीवन से बचना और खुश रहना चाहते हैं, तो अपने काम को एंजॉय करना होगा। निशा इमानदारी से काम करें, तो ज्यादा कुछ मिले-न मिले, भरपूर सुकून जरूर मिलेगा। यह आपका सबसे बड़ा रिवॉर्ड होगा। इसके अलावा गतिशील से सबक लेने, कमियों को दूर करने और हमेशा कुछ नया सीखने की ललकर रखेंगे, तो आपके आत्मविश्वास का स्तर ऊँचा रहेगा और आप मुश्किल से मुश्किल काम को भी उत्साह और होसले से कर सकेंगे। इस राह पर चलकर तरकी की सीधियाँ भी चढ़ते जाएंगे।

की समस्याएं ही गिनाने बैठ जाते हैं, टीम मेंबर्स से भी जिन्हें ढोरों शिकायतें होती हैं, सही मायने में उनका करियर हमेशा दाव पर लगा होता है। ऐसे लोगों को जब कभी कार्ड काम सौंपा जाता है, तो वे उसमें इतना बिलबाल कर देते हैं या फिर उन्होंने इतना उलझा देते हैं कि बैंस को आगे उठाने काम न देने के बारे में सोचना पड़ जाता है। ऐसे लोग अपनी इस कथित रणनीति पर भले ही खुश होते हीं पर जरा सोचें, क्या वह बैंस की उनकी प्रशंसा-अनुशंसा करेगा और जब कभी डिमोशन न कर पाया या फिर छठनी की स्थिति में उनका नाम ही आगे बढ़ा दिया गया, तो फिर क्या उन्हें संस्थान और बैंस की आलोचना का अधिकार होना चाहिए।



मार्टीय वायु सेना में करियर बनाने के लिए ऊर्जावान, उत्साही युवाओं की हमेशा मांग रही है। क्या आप इस प्रोफाइल में फिट बैठते हैं? एयर फोर्स, यानी वायु सेना में करियर को प्रतिष्ठित माना जाता है और युवाओं में यह खाली आप करियर बनाने हैं, तो आपका नाता देख सेवा, नवीनतम् तेवनोलॉजी और उत्कृष्ट शारीरिक मानसिक कौशल से होगा।

भारतीय वायु सेना को ऐसे युवाओं की जरूरत है, जो ऊर्जावान हों, पैशेनेट हों, उत्साही हों और जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रतिष्ठित हों। मगर ध्यान रहे, एयर फोर्स का हिस्सा होने में खासे परियोग्य होने की जरूरत होती है। इसकी चयन प्रक्रिया बहुत कड़ी है। इसमें प्रैविक्टिकल टेस्ट, रिटन टेस्ट, फिजिकल तथा मेडिकल टेस्ट, सायकोलॉजिकल टेस्ट, इंटरव्यू, गुप्ट टास्ट आदि शामिल होते हैं।

कैसे हों शामिल

भारतीय वायु सेना में शामिल होने के लिए आपको राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) की प्रवेश परीक्षा में बैठना होगा। यदि आपकी उम्र साल से 16 साल से 19 साल है, आप भारतीय नागरिक हैं और आपने फिजिक्स तथा मैथेस विधियों के साथ 12वीं पास की है, तो आप इस परीक्षा में बैठ सकते हैं। चयन के बाद उम्मीदवारों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में 3 साल की गहर ट्रेनिंग दी जाती है। इसकी समाप्ति पर एयर फोर्स अकादमी में स्पेशलिजड ट्रेनिंग होती है।

उत्साह और जुनून के साथ देशभवित वायु सेना में करियर

ग्रेजुएट भी एयर फोर्स का हिस्सा बन सकते हैं। आरंभिक चयन के बाद शॉट-लिस्ट किए गए उम्मीदवारों को एयर फोर्स ट्रेनिंग संस्थान में भेजा जाता है।

कौन-कौन सी ब्रांच

एयर फोर्स में करियर के अवसरों को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में बैठा जाता है: फ्लाइंग ब्रांच, टेक्निकल ब्रांच तथा ग्राउंड ब्रांच।

फ्लाइंग ब्रांच

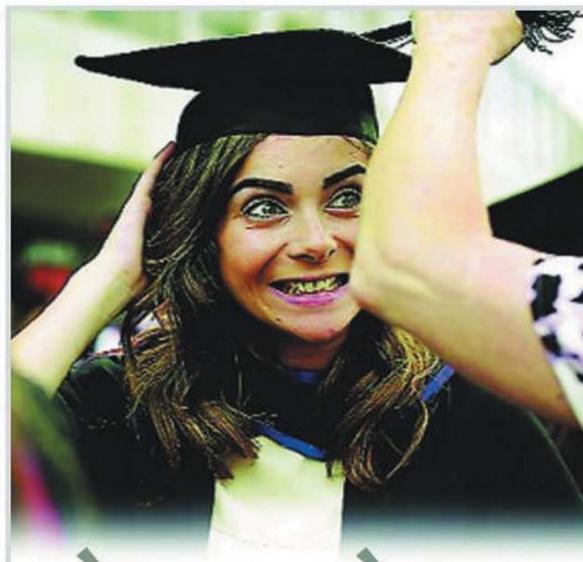
इस ब्रांच में विभिन्न श्रेणियों के पायलटों का चयन कर उठने की स्थिति है। इस ब्रांच में आकर आपको उड़ान भरने के भरपूर मौके मिलेंगे। इसमें हेलिकॉप्टर पायलट, फाइटर पायलट, ट्रांसोर्ट पायलट, एयर ट्रेनिंग हेलिकॉप्टर एवं ट्रेनिंग ट्रांसोर्ट के रूप में ग्रेजुएट्स तथा पोर्ट ग्रेजुएट्स के लिए अनेक अवसर हैं। ये विभिन्न श्रेणियों के काफी मात्रा में उपलब्ध होती है।

टेक्निकल ब्रांच

यह ब्रांच अन्य सभी ब्रांचों की अवधारणा का प्रबंधन करता है। इस ब्रांच में आकर आपको एयर फोर्स ट्रेनिंग संस्थान विभागों से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की नियुक्त करती है।

ग्राउंड ड्यूटी ब्रांच

यह ब्रांच मानव तथा अर्थ साधारणों के प्रबंधन करता है। इस ब्रांच में आकर आपको एयर फोर्स ट्रेनिंग संस्थान विभागों से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की नियुक्त करती है।



ग्रेजुएशन के बाद अमेरिका में जॉब

हाल ही में ग्रेजुएशन करने वालों के लिए अमेरिका में काम करने के लिए दो ओपेण्ट एक्सामिनेशन हैं: ऑफिशियल प्रेट्रिकल ट्रेनिंग (ओपीटी) तथा एची वीसा। ओपीटी ऐसे ताजा ग्रेजुएट्स के लिए एक कार्यक्रम है, जो अपनी पदार्थ की फ़िल्ड में कार्य अनुभव पाना चाहते हैं। इसके लिए दो शैक्षणिक पाठ्यक्रम हैं: पहली यह कि आपकी ओपीटी जॉब का सीधी संबंध आपकी कार्यक्रम से है। इसके लिए एक नौकरी है जो आपकी ओपीटी जॉब का कार्य करना चाहिए। इसके लिए एक नौकरी है जो आपकी ओपीटी जॉब का कार्य करना चाहिए। इसके लिए एक नौकरी है जो आप

